JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेमचंद के कथा साहित्य का सिनेमाई रूपांतरणः एक अध्ययन

श्रीमती रीना मीना

सहायक आचार्य हिन्दी विभाग

राजकीय महाविद्यालय कोटा

सारांश

किसी भी देश का उत्थान और पतन उस देश के साहित्य पर निर्भर है। जिस देश का साहित्य जितना उत्कृष्ट व समद्ध होगा वह देश उतना ही उन्नत व समृद्ध होगा। भारतीय समाज को कथा साहित्य के माध्यम से प्रतिबिंबित करने में मुंशी प्रेमचन्द का साहित्य यथार्थवादी लेखन का अभूतपूर्व उदाहरण है। उनके साहित्य में भारतीय समाज की आशा, सपने, संभावनाओं व विचारों के साथ संवेदना व विद्रूपताओं को वाणी मिली है। उनके कथा साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण भारतीय साहित्य और सिनेमा के मध्य सेतु का काम करता है। सामाजिक मानवीय संवेदनाओं की वर्तमान प्रासंगिकता के कारण पौराणिक से यथार्थबोध को सिनेमा में स्थान प्रेमचन्द कथा साहित्य का ही परिणाम है। सद्गति, शतंरज के खिलाड़ी, कफन, गोदान, गबन इसके उत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें उनके सिनेमाई रूपांतरण की प्रक्रिया में सफलता असफलता, समाजिक प्रभाव व उनके रूपांतरण में आई चुनौतियों को इस शोध पत्र में विश्लेषित किया जायेगा। यह शोध पत्र साहित्य और सिनेमा सहसंबंधों और प्रेमचन्द कथा साहित्य के सिनेमा रूपांतरण में आयी चुनौतियों और समाज पर पड़े उसके प्रभाव का मूल्यांकन करता है।

कुंजी शब्दः साहित्य, सिनेमा, पाठक, दर्शक, श्रव्य दृश्य, मनोरंजन, रूपांतरण, सिनेमाई।

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जिसमें हम अतीत, वर्तमान और भविष्य को देख सकते हैं. अतीत से हम अपने गौरव व सीमाएं जानकर उसमें वर्तमान स्थिति के अनुसार संशोधन करके भविष्य को बेहतर कर सकते हैं. साहित्य की भांति सिनेमा भी समाज का प्रत्यक्षतः दर्पण बनता जा रहा है. सिनेमा और साहित्य का अंतरंग संबंध होते हुए भी, वे एक दूसरे से भिन्न हैं. ये दोनों ही अपने तरीके से क्रमशः पाठक व दर्शक के ऊपर अपना अन्यत्तम प्रभाव छोड़ते हैं. साहित्य में लेखक पाठक के मन में चित्र बनाता है, जबकि सिनेमा श्रव्य दृश्य माध्यम है, जो प्रत्यक्षतः तात्कालिक प्रभाव छोड़ता है. प्रेमचंद के कथा साहित्य में मुख्य रूप से गरीबी, शोषण, लैंगिक भेदभाव, जातिगत विषमता, स्त्रियों की स्थिति को उजागर किया गया है. यह न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि भारतीय सिनेमा को भी गंभीर रूप से प्रभावित करता है।

सिनेमा और साहित्य :

सिनेमा, साहित्य और समाज तीनों का एक–दूसरे से गहरा संबंध है। समाज साहित्य को, साहित्य सिनेमा को और सिनेमा पुनः समाज को नवीन रूप को प्रभावित करता है। सिनेमा हमारे समाज को गहरे तक प्रभावित करता है। उसके के प्रभाव को अंकित करती दास गुप्ता की ये पंक्तियां प्रासंगिक प्रतीत होती है। षसिने आलोचक दास गुप्ता ने भारतीय सिनेमा को आधुनिक भारत का मंदिर कहा था जिसमें हिट नायक–नायिका लगभग देवी–देवता की स्थिति में होते हैं और उनका दर्शन

करने लाखों की संख्या में लोग सिनेमा हॉल में जाते हैं। दक्षिण भारत में कुछ कलाकरों के विधिवत मंदिर भी बनाये गये है।[1] छद्म की लोकप्रियता और सिनेमा लेख प्रमोद कुमार तिवारी) उत्कृष्ट साहित्य एक सभ्य समाज को जन्म देता है। परंतु वर्तमान समय साहित्य में मनोरंजन और वैयक्तिक प्रेम संबंधों पर ही अधिक ध्यान दिया जाने लगा है, इससे साहित्य की उत्कृष्टता पर प्रश्न चिह्न लगे हैं। प्रेमचन्द ने कहा है कि श्अगर हमने दो नवयुवकों की प्रेम कहानी कह डाली पर उससे हमारे सौन्दर्य–प्रेम पर कोई असर न पड़ा भी तो केवल इतना ही कि हम उनकी विरह–व्यथां पर रोयें तो इससे हममें कौन सी मानसिक या रुचि संबंधी गति पैदा हुई? इन बातों से किसी जमाने में हमें भावावेश हो जाता रहा हो तो हो जाता रहा हो पर आज के लिए बेकार है। ये पंक्तियाँ वर्तमान समय में चल रहे सिनेमा के लिए सटीक बैठती हैं। वर्तमान समय में भी कुछ इस तरह का सिनेमाई दृश्य देखने को मिलता है जिसमें हम हाल ही में चर्चित फिल्म सैयारा को देख सकते हैं जिसमें मनोरंजन व प्रेग कहानी को चित्रित करना व विरह व्यथा में अकेलेपन से खुद को जूझते किरदारों को दर्शाया गया है।

इससे समाज के नवयुवकों को विरह व्यथा व रिश्ते के टूटने के दुख से रोते हुए देखा जा सकता है, भावना संवेदनाओं की दृष्टि से आधुनिक समय के नवयुवकों को इसने प्रभावित भले ही किया हो लेकिन कुछ मानसिक या रुचि संबंधी गति क्या हुई, ये प्रेमचंद की पंक्ति को सही अर्थों में व्याख्यायित करती है। इसी संदर्भ में प्रेमचंद ने लिखा है कि ष्हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो. सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हम में गति, संघर्ष और बेचौनी पैदा करे, सुलाये नहीं"।[2] सिनेमा और समाज एक दूसरे से प्रभावित अवश्य होते हैं अतः हमारा कर्तव्य है कि हम सिनेमा में भी साहित्य में वर्णित उत्कृष्टता का ध्यान रखें। हमें समाज की गंभीर समस्याओं. संभावनाओं व विचारों को अपने साहित्य में स्थान देना चाहिए। लेखक को साहित्य रचना करते समय यथार्थ, वास्तविकता, सजीवता, भावव्यंजकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि समाज को प्रतिबिम्बित कर उचित दशा प्रदान कर सकें। सिनेमा के सामने ये चुनौती रहती है कि वह साहित्य की दिशा के साथ न्याय करे क्योंकि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व राष्ट्रीयता के साथ साहित्य में संवेदनाएं अधिक स्तर की होती हैं। ष्सिनेमा एक जिम की तरह है जहां कहानी के पात्रों के साथ रोकर, प्यार करके नफरत करते है जीकर मरकर अपनी सारी दबी हुई भावनाओं की अभिव्यक्ति, उनका रेचन करते हैं और हॉल से तरोताजा निर्मल होकर निकलते हैं जैसे हमारे मन ने स्नान कर लिया हो।[3] यह हमारे लिए शुद्धिकरण जैसा है। साहित्यकार के चिंतनशील मस्तिष्क का असर सिनेमाकार पर हावी रहता है। सिनेमा की भाषारूप सरल, सुनने–बोलने में अनुकरणीय होने के कारण अच्छा प्रभाव डालती है जो सभी को ग्राह्य होता है।

प्रेमचंद का कथा साहित्य और सिनेमाः चुनौतियां और संभावना :

साहित्य और सिनेमा दोनों को भारतीय समाज में पर्याप्त स्थान प्राप्त है। प्रेमचंद जो कि साहित्यकार हैं, जिस तरह से अपने साहित्यिक रूप से रचना को व्यापक प्रत्यक्ष रूपाकार देते हैं, उसी तरह फिल्म निर्माता–निर्देशक भी साहित्यानुरूप उसमें यथास्थिति संवेदनाओं और गंभीर वैचारिक मार्मिक दृश्यों को प्रधानता देते हैं। प्रेमचंद का साहित्य जन साहित्य है। यह मनुष्य के सुख–दुख में उनके मित्र की भांति कार्य करता है इसलिए इसकी लोकप्रियता अधिक है और हमेशा बनी रहेगी। प्रेमचंद ने समाज के निम्न वर्गों पर हो रहे अमानवीय शोषण का विरोध व मानवीयता का पक्ष लिया है। जिसके कारण इनकी लोकप्रियता वर्तमान समय में भी बनी हुई है। है। वर्तमान समय में इसके प्रत्यक्ष रूप को पाकर समस्याओं के निवारण व सुझाव में प्रासंगिकता बनी है। साहित्य और सिनेमा पर बात करते समय प्रो० रमा लिखती है। श्साहित्य एक ऐसी जमीन है जहां सिनेमा बार–बार लौटता है। सिनेमा के और अपनी पूरी चेतना के साथ लौटता है। सिनेमा के बनने की प्रक्रिया ही लेखन से आरम्भ होती है। समाज में जो कुछ घट रहा हैश पहले साहित्य उसे कलमबद्ध करता फिर सिनेमा के माध्यम से उसे प्रस्तुत किया जाता है।[4] प्रेमचंद ने समकालीन परिवेश में घटित वास्तविकताओं को अपने कथा साहित्य का विषय बनाया व परिवेशानुकूल पृष्ठभूमि प्रदान की। साहित्य का रूप सिनेमा के लिए पूर्वयोजना तैयार करने जैसा है जो उसे पूर्ण करता है। व्यापकता और श्रेष्ठता दोनों का ही महत्वपूर्ण आयाम है। सिनेमा और साहित्य का संबंध चोली दामन का था और है साहित्य और सिनेमा की सेतुबद्धता के कारण एक व्यापक वर्ग तैयार होकर जागरूकता और साहित्य को सम्मान दिलाने में सहायक होता है। प्रेमचंद के साहित्य को सिनेमा के माध्यम से वैश्विक मंच प्रदान हुआ है। उनकी सिनेमा रूपांतरण में, हम इतनी चुनौतियां नहीं देखते। उनकी संवेदनाओं और भाव व्यंजनाओं का स्तर यथार्थ होने के कारण उनको सिनेमा के क्षेत्र में काफी सफलता मिली है। प्रासंगिकता और वास्तविकता उनके साहित्य को समृद्ध बनाती

है। प्रेमचंद के साहित्य में पात्रों की स्थिति व शोषण को उचित परिवेश के साथ सिनेमा में चित्रित करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। हालांकि साहित्य सर्वोपरि होता है। वह व्यापक दृष्टिकोणों के साथ रचना को प्रस्तुत करने में भूमिका प्रदान करता है। कथा साहित्य प्राचीन समय से ही मनोरंजन व व्यस्त जिंदगी की ऊब को दूर करने का साधन रहा है। वर्तमान समय में अशिक्षित वर्ग तक भी सिनेमा ने अपने पैर पसारे हैं और एक व्यापक वर्ग के लिए मनोरंजन व जागरूक करने का कार्य किया है। प्रेमचंद के साहित्य में मनोरंजन के साथ–साथ सामाजिक सुधारों को लेकर विकृत विद्रूपताओं को भी साहित्य का विषय बनाया है जो वर्तमान में प्रासंगिक है। श्यह बहुत मनोरंजक साहित्यांश माना जाने लगा है। आजकल जब किसी पुस्तक को बहुत मनोरंजक पाया जाता है तो प्रायः कह दिया जाता है कि इस पुस्तक में मनोरंजन और आनंद भरपूर है।[5] हजारी जी का यह कथन कथा साहित्य में मनोरंजन को लेकर ही है कि आवश्यकता से अधिक मनोरंजन मनोरंजक साहित्य को हम श्रेष्ठ साहित्य की श्रेणी में नहीं रख सकते। साहित्य और सिनेमा में श्रेष्ठ साहित्य को समझा जाता है क्योंकि साहित्य लेखन निर्भय होकर किया जाता है उसमें किसी तरह का राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक दबाव नहीं होता जबकि सिनेमा में निर्देशक अपनी व्यावसायिकता के अनुरूप लाभ–हानि का ध्यान कर उसमें परिवर्तन कर देते हैं जो कि साहित्य के साथ न्याय नहीं कर पाते। इससे समाज को साहित्य की मूल संदेश देने की अनिवार्यता समाप्त ही हो जाती है। गुलजार का कथन है कि श्साहित्य और सिनेमा का संबंध एक अच्छे अथवा बुरे पड़ोसी, मित्र या संबंधी की तरह एक दूसरे पर निर्भर है। यह कहना जायज होगा कि दोनों में प्रेम संबंध है।[6] सिनेमा की सीमाओं के संदर्भ में एक बात और स्पष्ट है कि सिनेमा के साथ व्यवसाय और बाजार जुड़ा हुआ है जिसके कारण सिनेमा को कई मामलों में मूल कृति के साथ अन्याय करना पड़ता है। वास्तव में सिनेमा बाजार बहुत हावी है। बाजार अपनी कंडीशन रखता है। सारी गड़बड़ इसमें है।[7] साहित्यिक कृति के साथ यह समझौता न्याय नहीं कर पाता है। इस गड़बड़ी के चलते ही प्रेमचन्द ने सिनेमा छोड़ा था। इस संदर्भ में विनोद भारद्वाज की टिप्पणी उचित प्रतीत होती है। ष्आज भी किसी श्रेष्ठ साहित्यिक कृति का पाठक कहीं न कहीं इस बात से घबराता है कि इस या तो फिल्म न बने या बने तो मैं उसे न देखूं। यह एक गौर करने लायक विडम्बना है साहित्य के अच्छे पाठक की। एक युवा फिल्मकार ने हाल ही में अपनी पसंद की एक कहानी पर टिप्पणी की है कि मैं इसे तीन चार बार पढ़ चुका हूँ। मुझे जानकारी मिली है कि इस कहानी पर एक फिल्म भी बन रही है पर शायद मैं उसे देखना नहीं वाहूंगा। श्रेष्ठ साहित्य के पाठक की यह चिंता भी बुनियादी है कि पर्दे पर उसका मूल प्रभाव नष्ट–भ्रष्ट हो सकता है।[8]

साहित्य और समाज की निर्भरता की बात करें तो सिनेमा साहित्य को व्यापक दर्शक वर्ग तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और अच्छा साहित्य सिनेमा को प्रसिद्धि दिलाने में मदद करता है। प्रेमचंद के साहित्य में गहराई है जो सिनेमा के साथ श्रेष्ठ गंभीरता को प्राप्त हुई है। लोकप्रियता तो प्रेमचंद के कथा साहित्य को प्राप्त हुई ही साथ में नवीन तकनीकी की प्रगति प्रेमचंद साहित्य को श्रेष्ठ आयाम प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई। प्रेमचंद के अधिकतर रचनाओं का ग्रामीण परिवेश, पात्र, चरित्र चित्रण, भौगोलिक स्थिति और संवादों में समानता व सफलता प्राप्त की है। आकार और भाषाई विविधता की दृ ष्टि से साहित्य और सिनेमा में खास अन्तर नहीं है। सरलता व स्पष्टता के कारण अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी प्रेमचंद के सिनेमा रूपांतरण का फिल्म उत्कृष्टता पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। स्त्री पात्रों के चरित्र चित्रण का स्त्री दर्शक वर्ग पर भी व्यापक गहरी संवेदनाओं के साथ सिनेमा में भी चित्रण मिलता है। जिससे अशिक्षित महिला वर्ग भी सिनेमा से साहित्य की अनुभूति को प्राप्त कर सका और जागरूकता फैलाने में सफल रहा। प्रेमचंद के कथा–साहित्य को सिनेमा के क्षेत्र में अन्य साहित्यकारों की अपेक्षा अधिक प्रसिद्ध और उपयोगिता व सफलता प्राप्त हुई है।

प्रेमचन्द की रचनाओं के सिनेमाई रूपांतरण की प्रक्रिया और सफलताः

प्रेमचंद का कथा साहित्य मुख्य रूप से आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को लेकर चला है, जो सामाजिक सुधार व स्वतंत्रता संग्राम जैसे मुद्दों को उजागर करता है। उनके कथा साहित्य में वर्णित कहानी व उपन्यासों में गरीबी, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, शोषण, स्त्री–पुरुष असमानता, जातिप्रथा, मजदूरों की दुर्दशा को चित्रित किया गया है. इसमें कफन, पूस की रात, गोदान, सेवासदन, नमक का दारोगा, शतरंज के खिलाड़ी, सद्गति, निर्मला शामिल हैं। प्रेमचंद की रचनाओं में सिनेमा रूपांतरण हिंदी सिनेमा के प्रारंभिक दौर से ही शुरू हो गया था। उनके द्वारा रचित कहानी व उपन्यासों को सिनेमाकार बड़े पर्दे पर लाए यह उनके लिए एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा श्सेवासदनश जो कि वेश्या समस्या और समाज सुधार पर आधारित है प्रेमचंद का पहला उपन्यास था। इसका पहला सिनेमा रूपांतरण 1934 में हुआ, जो असफल रहा। बाद में भी इसके कई

रूपांतरण किए गए, परन्तु इसके मूल संदेश को व्यक्त करने में असफल रहे। केवल मनोरंजन व संगीत ही उसमें देखने को मिलता है।

गबन उपन्यास पर बनी फिल्म पहली गंभीर व सफल फिल्मों में से एक है। इसमें नैतिक मूल्यों के पतन व भ्रष्टाचार और सामाजिक दबाव को प्रभावी रूप से दर्शाया गया है। वर्तमान प्रासंगिकता व मनोरंजन, संगीत सभी दृष्टियों से यह आलोचकों व दर्शकों दोनों को प्रभावित करती है। गोदान उपन्यास किसान जीवन की त्रासदी का दस्तावेज है। को इतनी सफलता प्राप्त नहीं हुई, जितनी उसके साहित्यिक रूप को प्राप्त है. इसमें उसके ग्रामीण परिवेश को ही सम्यक सफलता प्राप्त हो पाई है, जो कि सराहनीय है। किसान जीवन की मार्मिकता और गंभीर सांमती शोषण को ठीक तरह से समझाने में सिनेमाई रूपांतरण आंशिक सफल रहा है। प्रेमचंद की कफन कहानी का सिनेमा रूपांतरण 1970–1977 में मृणाल सेन द्वारा किया गया, जो कि काफी सफल रहा। हालांकि इसमें अति यथार्थवाद व जाति विशेष को इंगित करने के कारण प्रेमचंद के साहित्यिक रूप पर ही कुछ प्रश्न चिह्न लगे हैं. परन्तु घीसू और माधव दोनों की संवेदनहीनता व भावनात्मक क्रूरता की फिल्मकारों ने बखूबी से चित्रित किया है।

नमक का दारोगा कहानी ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ युवा नमक के दारोगा वंशीधर के बारे में है, जो कि धन के ऊपर धर्म की जीत का प्रतीक है। यह वर्तमान समय में प्रासंगिक होने के साथ–साथ इसका सिनेमा रूपांतरण भी काफी सफल रहा है, इस कहानी को कई फिल्मकारों ने बार–बार सिनेमा रूपांतरण का रूप प्रदान किया है। पूस की रात का सिनेमा रूपांतरण विभिन्न रूपों में किया गया है. यथा–नाटक, रेडियो नाटक, फिल्म. इसमें किसानों के संघर्ष और मनोदशा व जानवरों की वफादारी का दृश्य अतीव मार्मिक है, जो कि उद्देश्य व संदेश को व्यक्त करने में काफी सफल रहा हैद्य

शतरंज के खिलाड़ी सत्यजीत राय द्वारा निर्देशित फिल्म प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी पर आधारित है। यह फिल्म अवध के नवाबी युग में ब्रिटिश उपनिवेशवाद और सामाजिक उदासीनता को चित्रित करती है. निदेशक ने प्रेमचंद की कहानी को सिनेमा की भाषा में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है, जिसमें संवादों व दृश्यांकनों का उत्कृष्ट समन्वय है। यह फिल्म प्रेमचंद के साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण में साहित्य के समानांतर, वर्तमान प्रासंगिकतानुकूल यथास्थिति पूर्ण सफल कही जा सकती है। ष्वस्तुत सत्यजीत रॉय ने प्रेमचन्द की शतरंज के खिलाडी कहानी के बहाने अपनी इसी शीर्षक से बनी फिल्म में 19वीं शताब्दी के लखनऊ के जीवन के लगभग हर पक्ष का अध्ययन कर डाला। इसके लिए उन्होंने इतना गहरा और व्यापक शोध किया कि ऑक्सफोर्ड जैसे विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ने उनकों डी.लिट की मानद उपाधि प्रदान की।[9] प्रेमचंद की श्सदगति कहानी जातिप्रथा तथा सामाजिक शोषण को उजागर करने वाली प्रसिद्ध कहानी है, जो कि सिनेमा रूपांतरण में यथार्थवादी दृ ष्टिकोण को लेकर चलने में पूर्ण रूप से सफल हुई है। प्रेमचंद की रचनाओं में सिनेमाई रूपांतरण करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें मुख्य रूप से मूल संदेश का हास हो जाता है व अपने केंद्रीय संदेश को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर पाते. उदाहरण के लिए, इसेवासदन के फिल्म रूपांतरण में दर्शकों का ध्यान रखकर रोचकता व मनोरंजन के लिए संगीत पर अधिक ध्यान दिया गया है। सेवासदन का मूल संदेश वेश्या समस्या व समाज सुधार को प्रभावी ढंग से नहीं दर्शाया गया है। सिनेमा की व्यावसायिक सफलता के लिए दर्शकों की रुचियों जैसे संगीत, नाटक, मनोरंजन को पूरा करना पड़ता है. जो प्रेमचंद की यथार्थवादी शैली से मेल नहीं खाता, जिससे फिल्मकार उनके मूल संदेश से भटक जाते हैं।

प्रेमचंद ने अपने लेख श्फिल्म और साहित्यश में लिखा था, श्लोगों की धारणा है कि जब से सिनेमा सवाक् हो गया हैश। साहित्य का अंत हो गया है और साहित्य सेवियों के लिए कार्य का नया क्षेत्र खुल गया है। साहित्य भावों को जगाता है। सिनेमा भी भावों को जगाता है, इसलिए वो भी सहित्य है। लेकिन प्रश्न यह होता है, कैसे भावों को? साहित्य वह है जो ऊंचे और पवित्र भावों को जगाये और सुंदरतम को हमारे सामने लाये... हमारा खयाल है कि हमारे चित्रपटों में यह बात नहीं मिलती। उनका उद्देश्य केवल पैसा कमाना है। सुरुचि या सुंदरता से उनका कोई प्रयोजन नहीं है। वो तो जनता को वही चीज देंगे जो वो मांगती है, व्यापार व्यापार है।[10] फिल्मकार दर्शकों की मांग के अनुरूप साहित्य का कलेवर बदलने व व्यावसायिकता को प्राथमिकता देने के उद्देश्य से साहित्य की आत्मा को ही बदल देता है और दर्शकों को सम्मोहित करने में सफल होता है हालांकि फिल्म हमारी रोजमर्रा की जिंदगी की विसंगतियों को धरातल प्रदान करती है इस तरह हम सिनेमा के दो मुख्य प्रवृतियों के साथ देखते हैं मुख्यधारा सिनेमा जिसमें मूल उद्देश्य से भटकाव है और दूसरा सार्थक सिनेमा जो दर्शक को वैचारिक धरातल प्रदान करने मे सफलता को प्राप्त करता है साहित्य कालजयी होता है, जबकि सिनेमा काल सापेक्षप उसमें दृश्यात्मकता और संक्षिप्तता की मांग होती हैप साहित्य में गहन मनोवैज्ञानिक चित्रण आसानी से

संभव है॰ प्रारंभ में तकनीकी संसाधनों की कमी के कारण प्रेमचंद की कथाओं को पर्दे पर उतारना थोड़ा मुश्किल था, परंतु वर्तमान समय में इसमें काफी परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं. प्रेमचंद के साहित्य का सिनेमा और समाज पर दर्शनीय प्रभाव पड़ा है॰ प्रेमचंद के कथा साहित्य ने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि सिनेमा के माध्यम से उस ग्रामीण व्यापक वर्ग को भी सामाजिक सुधार व जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरित किया है, जो अशिक्षित है. सत्यजीत राय जैसे फिल्मकारों ने प्रेमचंद की रचनाओं को वैश्विक मंच पर ले जाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया और भारतीय हिंदी साहित्य का मान बढ़ाया. साथ ही प्रेमचंद की रचनाओं के समानांतर सिनेमा को भी प्रेरित किया, जिसमें 70 के दशक में मणिकौल, गुलजार जैसे फिल्मकारों को प्रभावित किया। उनकी रचनाएँ आज भी उतनी प्रासंगिक है, क्योंकि वे सामाजिक असमानता और मानवीय संवेदनाओं को गहराई से प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष :

प्रेमचंद का कथा साहित्य हिंदी साहित्य और सिनेमा दोनों के लिए एक अमूल्य धरोहर के समान है॰ उनके साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण, विशेष रूप से बगोदान, गबन, शतरंज के खिलाड़ी, पूस की रात. कफन, सद्गति जैसे उदाहरणों में सामाजिक यथार्थ प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है॰ हालांकि कुछ रूपांतरण मूल पाठ के साथ न्याय नहीं कर सके, फिर भी प्रेमचंद की रचनाओं ने साहित्य और सिनेमा के मध्य सेतु का काम किया है, जो समाज को बदलने की शक्ति रखती है॰ सिनेमाई रूपांतरण वह माध्यम है, जिसके द्वारा प्रेमचंद के कथा साहित्य में चित्रित भाव को ग्रामीण परिवेश में भी अशिक्षित लोगों तक प्रसारित होने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है॰ भविष्य में प्रेमचंद की रचनाओं को और अधिक उन्नत बनाने के लिए तकनीकी व संवेदनाओं के उन्नत रूपांतरण की आवश्यकता है॰ जिससे उसके वास्तविक साहित्यिक रूप को और अधिक प्रश्रय मिले॰ उनकी यथार्थवादी दृष्टि को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके, हालांकि वर्तमान समय में तकनीकी व संसाधनों के रूप में नवीनता आने के कारण प्रेमचंद की रचनाओं का पुनरुपांतरण वर्तमान प्रासंगिकतानुकूल किया जा सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. नया पथ जनवरी—जून संयुक्तांक 2013 पृ. 83 छन्द्म की लोकप्रियता और सिनेमा, प्रमोद कुमार तिवारी का लेख।
2. प्रेमचन्द कुछ विचार प्रेमचन्द, सरस्वती प्रेस बनारस, 1945 तृतीय संस्करण पेज. नं. 21
3. नया पथ जनवरी—जून 2013 संयुक्ताक पेज 81—82 परछाइयों की सल्तनत उर्फ सिनेमा का सचः कमलेश पाण्डे का लेख
4. हिन्दी सिनेमा में साहित्यिक विमर्श, पृ. भूमिका से हंस प्रकाशन नई दिल्ली द्वितीय संस्करण 2022
5. एक साहित्य सहचर, उपन्यास और कहानी शीर्षक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 75—76
6. मीडिया और साहित्य अंतर्संबंध, पाण्डेय रतनकुमार सं. 2014 दिल्ली आनन्द प्रकाशन पू.सं. 66
7. नया पथ जनवरी जून संयुक्तांक 2013 पृ.78 साहित्य को सिनेमा में लाने के लिए सिनेमाई भाषा ढूढनी पड़ेगी : सागर सरहदी से मानवेन्द्र सिंह की बातति का लेख
8. नया पथ जनवरी जून संयुक्तांक 2013 पृ.73 साहित्य और सिनेमा के नाजुक रिश्ते : विनोद भारद्वाज का लेख
9. हिन्दी साहित्य और सिनेमा विवेक दुबे पृ.20
10. नया पथ जनवरी जून संयुक्तांक 2013 पृ सं 183—184 फिल्मों में साहित्य और लेखक की भूमिका : शरद दत्त का लेख